नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मोदी- जिनपिंग वार्ता से पिघली रिश्तों की बर्फ

भारत और चीन के संबंधों में लंबे समय से जमी बर्फ अब पिघलती दिखाई दे रही है .हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच नई दिल्ली में हुई करीब 50 मिनट की मुलाकात ने दोनों देशों के रिश्तों में एक नए दौर की उम्मीद जगाई है. गलवान की हिंसक घटना के बाद भारत-चीन संबंध जिस गहरे तनाव में पहुंच गए थे, वहां से शीर्ष नेतृत्व की आमने-सामने बातचीत तक पहुंचना मामूली घटनाक्रम नहीं है. यह संकेत है कि दोनों देश अब टकराव के बजाय संवाद और व्यावहारिक सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं. इस मुलाकात की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि बातचीत के रास्ते को फिर से मजबूत करने पर जोर दिया गया है.

दोनों देशों के बीच निरंतर संवाद और सूचनाओं का आदान-प्रदान जारी रखने पर सहमति इस बात का संकेत है कि रिश्तों में आई खाई को धीरे-धीरे पाटने का प्रयास हो रहा है. सीमा जैसे संवेदनशील मुद्दे में संवाद जितना लगातार और पारदर्शी होगा, गलतफहमियों और तनाव की आशंका उतनी ही कम होगी. प्रधानमंत्री मोदी ने भारत का रुख स्पष्ट करते हुए पारस्परिक सम्मान, पारस्परिक संवेदनशीलता और पारस्परिक हित को द्विपक्षीय संबंधों का आधार बताया है. भारत के लिए सीमा पर शांति और स्थिरता सबसे महत्वपूर्ण है. गलवान के बाद एलएसी पर जिस तरह दोनों देशों की सेनाएं आमने-सामने आईं, उसने यह साफ कर दिया था कि सीमा पर तनाव का असर पूरे द्विपक्षीय रिश्ते पर पड़ता है. इसलिए पुराने समझौतों और सहमतियों का पालन, सैन्य स्तर पर संवाद और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर विश्वास बहाली जरूरी है.

सकारात्मक बात यह है कि दोनों देशों के नेतृत्व ने अब संवाद को आगे बढ़ाने का फैसला किया है. इससे सीमा विवाद के समाधान की उम्मीद को भी बल मिलता है .भारत और चीन के संबंध केवल सीमा विवाद तक सीमित नहीं हैं. दोनों बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं और इनके बीच व्यापार, निवेश, आपूर्ति श्रृंखला तथा लोगों के बीच संपर्क का व्यापक महत्व है. सीधी उड़ानों की बहाली की दिशा में बढ़ते कदम भी रिश्तों को सामान्य बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा हैं. बेहतर कारोबारी और मानवीय संपर्क दोनों देशों के हित में हैं.

भारत अपने राष्ट्रीय हितों से समझौता किए बिना चीन के साथ आर्थिक संबंधों को अधिक संतुलित और व्यावहारिक रूप दे सकता है. हालांकि, चीन के सीमा संबंधी दावे और पाकिस्तान के साथ उसकी रणनीतिक निकटता जैसी चुनौतियां अभी समाप्त नहीं हुई हैं. इसलिए मौजूदा नरमी को स्थायी समाधान मान लेना जल्दबाजी होगी. भारत को अपनी सुरक्षा और सामरिक हितों के प्रति पूरी तरह सजग रहते हुए ही आगे बढ़ना होगा. लेकिन कूटनीति में संवाद बंद कर देना समाधान नहीं है. बातचीत जारी रखना ही समाधान की पहली सीढ़ी है. मोदी- जिनपिंग वार्ता ने इस बंद रास्ते को फिर खोल दिया है. रिश्तों में जमी बर्फ निश्चित रूप से पिघली है और दोनों देशों ने संवाद तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान को जारी रखने की जरूरत स्वीकार की है.

अब जरूरत इस बात की है कि इस सकारात्मक माहौल को जमीन पर ठोस प्रगति में बदला जाए. यदि एलएसी पर शांति कायम रहती है, पुराने समझौतों का पालन होता है और विश्वास बहाली के कदम आगे बढ़ते हैं तो सीमा विवाद के समाधान की उम्मीद भी मजबूत होगी. भारत और चीन के बीच स्थायी शांति केवल दोनों देशों के लिए नहीं, बल्कि पूरे एशिया की स्थिरता और आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण होगी.

डिजिटल दौर में बदलता हिंदी का स्वरूप

धर्मेन्द्र कमरिया
(पत्रकार एवं स्वतंत्र अध्येता)

आज के डिजिटल युग में हमारी मातृभाषा हिंदी के कलेवर और तेवर—दोनों बदल चुके हैं. भारत में इंटरनेट और स्मार्टफोन की क्रांति ने हिंदी के स्वरूप को इतनी तेजी से प्रभावित किया है, जितना शायद पिछली कुछ सदियों में भी नहीं हुआ था. आज हिंदी केवल साहित्य की गंभीरता, शब्दों की क्लिष्टता और अखबारों के पन्नों तक सीमित नहीं है. वह रील्स, मीम्स, ट्वीट्स और चैट बॉक्स की भी प्रमुख भाषा बन चुकी है.

इसके साथ ही एक सवाल भी लगातार उभर रहा है कि डिजिटलीकरण ने सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से हिंदी को एक नया वैश्विक मंच तो प्रदान किया है, लेकिन क्या उसने हिंदी की लिपि और शब्दावली के पारंपरिक स्वरूप को सीमित भी किया है? आज जेन-ज़ी और मिलेनियल पीढ़ी व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, एक्स (पूर्व में ट्विटर) और थ्रेड्स जैसे मंचों पर देवनागरी की बजाय रोमन लिपि में संवाद करना अधिक सहज मानती है. यह सच है कि किसी भी भाषा की पहचान और सांस्कृतिक आत्मा उसकी लिपि से जुड़ी होती है. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिंदी और उर्दू, दोनों लिपियों को सीखने की बात कही थी. साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया था कि हमें अंग्रेजी की आवश्यकता जरूर है, लेकिन अपनी भाषा के विनाश की कीमत पर नहीं.

आज हिंदी की शब्दावली में भी बड़े पैमाने पर बदलाव दिखाई देता है. आम बोलचाल के हिंदी शब्दों की जगह अंग्रेजी के शब्दों का बढ़ता प्रयोग 'हिंग्लिश' के रूप में हमारे दैनिक संवाद का हिस्सा बन गया है. इसका एक प्रमुख कारण देवनागरी की-बोर्ड की तुलना में अंग्रेजी की-बोर्ड का अधिक सहज और सुविधाजनक होना भी है. इन तमाम बदलावों ने भाषाविदों के बीच एक महत्वपूर्ण बहस को जन्म दिया है—क्या डिजिटल युग में हिंदी का दायरा लगातार सिकुड़ रहा है? इसका अंतिम उत्तर तो भविष्य ही देगा. किंतु इस बहस के बीच हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है. यह भी सच है कि बाजार ने हिंदी के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

सोशल मीडिया, ओटीटी, डिजिटल पत्रकारिता और ऑनलाइन मनोरंजन के बढ़ते प्रभाव ने हिंदी को देश की सीमाओं से बाहर भी व्यापक दर्शक और पाठक वर्ग उपलब्ध कराया है. इसलिए वर्तमान दौर को केवल हिंदी के क्षरण के रूप में देखना उचित नहीं होगा. इसके बजाय इसे हिंदी के बदलते स्वरूप और नए अवसरों के दौर के रूप में समझने की आवश्यकता है. आखिर भाषा कभी स्थिर नहीं रहती. वह एक बहती हुई नदी की तरह है, जो समय, समाज और तकनीक के साथ अपना रास्ता बदलती रहती है. हिंदी भी इसी प्रवाह का हिस्सा है. चुनौती यह नहीं है कि हिंदी बदल रही है; चुनौती यह है कि बदलते हुए समय के साथ हिंदी अपनी मूल पहचान, समृद्ध शब्द-संपदा और देवनागरी की गरिमा को बनाए रख सकेगी या नहीं.

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बढ़ती निर्भरता के साथ संतुलन बनाना बड़ी चुनौती- इंटरनेट और स्मार्टफोन के विस्तार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा बना दिया है. व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और टेलीग्राम जैसे मंच अब केवल लोगों के बीच बातचीत तक सीमित नहीं हैं. सूचना के प्रसार, मनोरंजन, कारोबार, विज्ञापन और जनमत निर्माण में इनकी भूमिका लगातार बढ़ी है. प्लेटफॉर्म की यह बढ़ती ताकत जहां डिजिटल अर्थव्यवस्था और संचार के लिए नए अवसर पैदा कर रही है, वहीं साइबर ठगी, ऑनलाइन पायरेसी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तैयार भ्रामक सामग्री और बच्चों के यौन शोषण से जुड़ी सामग्री जैसी गंभीर चुनौतियां भी सामने ला रही है.

इन परिस्थितियों में भारत में डिजिटल प्लेटफॉर्म की जवाबदेही और नियमन को लेकर बहस तेज हुई है. सबसे अहम सवाल यह है कि उपयोगकर्ताओं की निजता और सुरक्षित संचार की रक्षा करते हुए गंभीर अपराधों की जांच के लिए आवश्यक जवाबदेही कैसे सुनिश्चित की जाए.

यूजरनेम से बढ़ी सुविधा, लेकिन जांच भी कठिन

डिजिटल संचार में यूजरनेम आधारित पहचान उपयोगकर्ताओं को अपना मोबाइल नंबर सार्वजनिक किए बिना बातचीत की सुविधा दे सकती है. इससे निजी जानकारी के अनावश्यक प्रसार को कम किया जा सकता है. हालांकि, इसी व्यवस्था का इस्तेमाल फर्जी पहचान, फिशिंग, पहचान की चोरी और प्रतिरूपण जैसी गतिविधियों में किए जाने की आशंका भी रहती है .एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन भी इसी जटिल बहस का हिस्सा है. यह तकनीक संदेशों को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन गंभीर अपराधों की जांच के दौरान संबंधित जानकारी तक पहुंच कानून-प्रवर्तन एजेंसियों के लिए मुश्किल हो सकती है. ऐसे में निजता और अपराध की जांच के बीच संतुलन कायम करना नियामकों के सामने बड़ी चुनौती है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

सिंहस्थ पूर्व ओंकारेश्वर को उज्जैन सी दरकार

संजय व्यास

सिंहस्थ को डेढ़ साल बचा है. दूर-दूर से आए श्रद्धालु महाकालेश्वर के दर्शन पश्चात ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग की पूजा करने पहुंचते हैं. भीड़ प्रबंधन व सुगम दर्शन के लिए जिस प्रगति से उज्जैन का कायाकल्प किया जा रहा है, वैसी ही दरकार ओंकारेश्वर को है. उज्जैन में 2028 में होने वाले सिंहस्थ के लिए सरकार ने विशेष अमला नियुक्त कर रखा है, पर ओंकरेश्वर का जिम्मा स्थानीय व जिला प्रशासन के पास है. विकास कार्यों के लिए राशि की कोई कमी नहीं

है, लेकिन योजनाबद्ध विजन के अभाव में कार्य गति नहीं पकड़ पा रहे. उज्जैन में तो महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की व्यवस्थाएं मुख्यमंत्री के रहते दुरुस्त हो रही हैं, लेकिन ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग में तो जिला प्रशासन और लोकल के लोग व्यवस्थित कार्य नहीं कर पा रहे.

जिला प्रशासन के पास और भी जिले भर के कार्य होने से अव्यवस्थाओं को नहीं रोका जा सकता. इसलिए अभी तक कोई कार्य धरातल पर नजर नहीं आ रहा. उधर ओंकारेश्वर में धर्मालु पर्यटकों की जब-तब डूबने से मौत की घटनाओं की रोकथाम की दिशा में भी सफल प्रयास नहीं दिख रहे. ओंकारजी के दर्शन के लिए लोग आते हैं और प्रशासनिक लापरवाही के चलते 10 प्रतिशत लोग बिना दर्शन के ही वापस जा रहे हैं. ऐसे में सवाल यह उठता है कि सिंहस्थ के समय लोगों को किस तरह नया सिस्टम दिया जाएगा. समय की कमी के मद्देनजर अब सरकार को ओंकारेश्वर के लिए भी अलग से अमले की तैनाती जरूरी है. ताकि सिंहस्थ पूर्व सारी व्यवस्था और विकास कार्य सुचारु हो जाए. मांधाता के विधायक नारायण पटेल पहले ही कह चुके हैं कि यहां की व्यवस्थाएं इंदौर प्रशासन के उच्च अधिकारियों को सौंप दी जानी चाहिए.

पटेल-अजनार भिड़े

आलीराजपुर के पूर्व कांग्रेस जिलाध्यक्ष महेश पटेल और भाजपा नेता व सामाजिक कार्यकर्ता कमरू अजनार में विगत दिनों जमकर तू-तू मैं-मैं हुई .दरअसल क्षेत्र में जमीन अधिग्रहण के मुद्दे पर महेश पटेल धरना प्रदर्शन कर रहे थे. उन्होंने आदिवासियों की जमीन छिन जाने की बात के साथ अजनार को भी लपेटे में ले लिया. पटेल ने ग्राम खंडाला में आदिवासियों की जमीन खेती के नाम पर हड़पने का आरोप अजनार पर लगा दिया. इससे अजनार भडक़ गए. उन्होंने पटेल को आड़े हाथ लिया और चुनौती दी कि बताएं मैंने किसकी जमीन हड़प ली. रही बात जमीन अधिग्रहण की तो मुख्यमंत्री, कलेक्टर खुद कह चुके हैं कि किसी की जमीन नहीं ली जाएगी. फिर भी महेश पटेल आदिवासियों को बरगलाने में लगे है.

ओवैसी की उम्मीद पर खंडवा ने पानी फेरा

विगत निकाय चुनावों में आप, एआईएमआईएम ने प्रदेश में राजनीतिक पैर पसारने की संभावना देखने अपने उम्मीदवार उतारे थे. अंचल में एआईएमआईएम को खंडवा खरगोन में कुछ सफलता मिली भी. खंडवा, बुरहानपुर नगर निगम और खरगोन में उसके पांच प्रत्याशी विजयी रहे थे. खंडवा व बुरहानपुर नगर निगम में एक-एक पार्षद चुने गए थे, वहीं खरगोन नगर पालिका में एक हिंदू महिला सहित तीन उम्मीदवारों ने पार्षद पद पर जीत दर्ज कर पार्टी का खाता खुलवाया था. इन क्षेत्रों में सफलता से पार्टी प्रमुख असुद्दीन ओवैसी उत्साहित थे, परंतु अगले चुनाव आते-आते भावी तैयारी में लगे असुद्दीन ओवैसी को खंडवा ने झटका दे दिया है. हाल में खंडवा नगर निगम में एआईएमआईएम के एकमात्र पार्षद शाकिरा बिलाल पेंटर ने पार्टी से किनारा कर लिया. वे ही नहीं उनके साथ पार्टी के कई बड़े पदाधिकारियों ने कांग्रेस की विचारधारा में आस्था जताते हुए कांग्रेस का दामन थाम लिया. कांग्रेस में शामिल होने वालों में पूर्व शहर अध्यक्ष बिलाल पेंटर, पूर्व यूथ अध्यक्ष मुस्तकीम तिगाला और महिला विंग की पूर्व सचिव सहाना सैय्यद शाह शामिल हैं. मुस्लिम बहुल खंडवा से आगामी वर्ष होने वाले निकाय चुनाव में ओवैसी को खंडवा से काफी उम्मीद थी और इसके लिए वे अधिक से अधिक पार्षद पद पाने की रणनीति तैयार करने में लगे थे.

क्यों बर्बादी के कगार पर पहुंचा बीएसएनएल?

एक समय था, जब दूरसंचार के क्षेत्र में बीएसएनएल का प्रभुत्व था. 2 दशक पहले इस कंपनी का कारोबार 45,000 करोड़ रुपये और मुनाफा 4000 करोड़ रुपये था. अब इसका टर्नओवर घटकर 25,000 करोड़ पर आ गया है. टेलीकॉम क्षेत्र में अंबानी के जियो का वर्चस्व पूरी तरह छा गया है. बीपीएल, टाटा टेलीसर्विसेस, वोडाफोन सभी मैदान से बाहर हो गए. बीएसएनएल की दुर्दशा के लिए सरकारी नीतियां जिम्मेदार हैं. इस कंपनी को वर्षों तक मोबाइल सेक्टर में उतरने नहीं दिया गया और वह लैंडलाइन तक सीमित रही. जब बीएसएनएल ने मोबाइल क्षेत्र में प्रवेश किया तो हालत यह थी कि उसके सिम कार्ड के लिए लाइन लगानी पड़ती थी. स्वयं संचार मंत्री ने कंपनी की 4 करोड़ लाइन मोबाइल निविदा को मामूली कारण बता कर मंजूरी नहीं मिलने दी. उसे नई प्रौद्योगिकी में निवेश नहीं करने दिया. ऐसी नीति बनाई गई, जिसमें बीएसएनएल को अपने मोबाइल टॉवर प्रतिद्वंद्वी पार्टियों से शेयर करने पड़े. ऐसा कदम पहुंच या एक्सेस बढ़ाने के नाम पर उठाया गया. जब 4 जी आया तो बीएसएनएल को

लोगों की मांग के बावजूद डायरेक्टरी नहीं छापी गई. ग्राहकों के नंबर बदले गए. इससे संपर्क करना मुश्किल हो गया था. मजबूर लोगों ने लैंडलाइन कनेक्शन कटवा दिया. यह धारणा व्याप्त होने लगी कि उनके कर्मचारी काम नहीं करते.

व्यावसायिक दर पर स्पेक्ट्रम खरीदने को कहा गया. उसकी सार्वजनिक सेवाओं को भुला दिया गया. कंपनी को स्पेक्ट्रम खरीदने के लिए कोई वित्तीय मदद नहीं दी गई, बल्कि अपने स्टाफ की छटनी करने के लिए 72,000 करोड़ रुपये का पैकेज दिया गया. उसे अपनी स्वदेशी 4 जी प्रौद्योगिकी स्वयं विकसित करने को कहा गया. जबकि प्रतिद्वंद्वी कंपनियों ने इसे सीधे खरीद लिया. नतीजा यह निकला कि प्रतिद्वंद्वी कंपनियां 5 जी तक चली गईं और बीएसएनएल का 4 जी वास्तव में 3 जी से भी घटिया तरीके से काम करने लगा. लोगों के लैंडलाइन फोन बार-बार डेड होने लगे. ग्राहकों को लगने लगा कि उसकी सर्विस सही नहीं है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मायावती निर्णय लेने को आजाद, नहीं चलाएंगी भाई-भतीजावाद

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज बसपा प्रमुख मायावती की माया को समझना आसान नहीं है. कभी वह अपने भतीजे आकाश को पार्टी में जिम्मेदारी देती हैं तो कभी एक झटके से बाहर का रास्ता दिखा देती हैं. अब उन्होंने तय किया है कि बसपा में अपने भतीजों यानी भाई आनंद कुमार के बेटों आकाश और ईशान को कोई राजनीतिक पद नहीं देगी. मायावती ने यह भी कहा कि वह अपने गुरु कांशीराम के समान परिवारवाद के खिलाफ हैं. उन्होंने अपने भाई-बहनों व रिश्तेदारों को विधायक, सांसद या मंत्री नहीं बनाया. भविष्य में भी जब उनकी सरकार बनेगी तो वह इसी नीति पर चलेंगी.

हमने कहा, 'मायावती चिरकुंवारी हैं. उन्हें अपना राजनीतिक उत्तराधिकारी चुन लेना चाहिए. उन्हें अपने भतीजों से इतनी नाराजगी क्यों है?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह बुआ-भतीजों का आपसी मामला है. सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने भी

तो एक समय मायावती को बुआ कहा था. ऐसा ही चाचा-भतीजे का भी रिश्ता है. अखिलेश की अपने चाचा शिवपाल यादव से नहीं पटती. बंगाल में ममता बनर्जी भी अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी से परेशान हैं. भतीजा जब पार्टी पर कब्जे की प्लानिंग करता है और मनमानी व भ्रष्टाचार करने लगता है, तो पार्टी बदनाम होने लगती है. नेता पर भाई-भतीजावाद, परिवारवाद या नेपोटिज्म चलाने का आरोप लगता है.

हमने कहा, 'पहले भी चाचा-भतीजे की आपस में नहीं पटी थी. धृतराष्ट्र ने अपने भाई पांडु के बेटों युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव को वनवास में भेजा था. धृतराष्ट्र के कौरव वंश ने पांडवों से पक्षपात और घोर अन्याय किया था. इसीलिए महाभारत का भीषण युद्ध हुआ. धृतराष्ट्र ने अपने पुत्र दुर्योधन के अंधमोह में अपने भतीजे पांडवों के साथ नाइंसाफी की थी. जहां तक मायावती ने भतीजे को दूर करने की ठानी है, वह यूपी में होने वाले विधानसभा चुनाव को देखते हुए उठाया गया कदम है. वह दिखाना चाहती हैं कि वह परिवारवादी नहीं हैं.'

शब्द-सागर 12380

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	■	3		4	■	5
6		■		■	7		
	■	8		9		■	
10	11		■		■	12	
■	13		14				■
15		■		■	16		17
18		■	19			■	
20				■	21		

ऊपर से नीचे
1. द्वारपाल, आसाबरदार 2.छोटी पहाड़ी, मिट्टी या बालू का ऊंचा ढेर 3. नमाज के वास्ते बुलाने की पुकार 4. रात, निशा 5. ताकतवर, शक्तिशाली 8. सहायता 9. मलना, रगड़ना, मर्दन, मलने का भाव 11. जो एक ही समय या काल में हुए हों 12. सम्मिलित 14. समझदार,बुद्धिमान, दक्ष 15. छोटा राजा, सरदार 16. चाकर, वैतनिक कर्मचारी 17. विशुद्ध

बाएं से दाएं
1. शिखा, स्त्रियों के गुंथे हुए बाल, पहाड़ का सबसे ऊंचा भाग 3. उतावला, धैर्य रहित, उद्विग्न, आकुल, अस्थिर चित्त 6. आपत्ति, भूत-प्रेत 7. दुरूह, दुर्बोध, जटाधारी 8. ऐसा काम जो मन को भला लगे, मनमाना काम 10. सेना का वह खाद्य पदार्थ जो उसके साथ होता है 12. ठाट-बाट, ऐश्वर्य 13. नशे में चूर, बेहोश 15. जड़ाऊ, बहुमूल्य 18. साधु, शासक, अभिभावक 19. मांगने वाला, भिखारी 20. प्रकाश, रौशनी, नूर 21. धनी, अमीर, बड़ा आदमी

Solution 12379

ज	न	म	ना	■	अ	री	■
मा	■	नो	न	■	सु	त	ली
ई	श्व	र	■	प	र	ना	ला
■	स	म	त	ल	■	■	व
ध	न	■	बे	क	ल	■	ती
म	■	शा	ला	■	ह	या	■
का	य	म	■	क	र	त	ब
ना	म	क	र	ण	■	ना	ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यापारिक कार्यों में अधिक परिश्रम से आंशिक सफलता के योग है. व्यय और संतान की चिन्ता से मन अशांत रहेगा. वाणी में कठोरता तथा प्रियजनों के प्रति उदासीनता रहेगी. निर्णय सोच विचार कर करना हितकर रहेगा. वर्ष के मध्य में सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. राज्य सम्मान प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में मान सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग बना रहेगा. नवीन कार्यों में रूचि रहेगी. व्यापार में लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग मिलेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यवसायिक कार्यों में परिश्रम अधिक करना होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष की चिन्ता रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को संतान का सहयोग रहेगा. मकर और कुंभराशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को साहसिक कार्यों की प्रशंसा मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक कल्पनाप्रिय होगा, साहसी और निडर रहेगा, इसकी शिक्षा उत्तम होगी, किसी विशेष तकनीकी विद्या का ज्ञाता होगा, अपने लक्ष्य के प्रति निश्चयी होगा, पिता का भक्त रहेगा.

मेष- कारोबारी विस्तार की संभावना है, आय में वृद्धि होगी, परन्तु अनावश्यक धन खर्च होगा, मित्रों से मतभेद हो सकता है, व्यापारिक लेनदेन के मामले सुलझेंगे.

वृषभ- कामकाज की व्यस्तता रहेगी, इच्छानुसार कार्य होंगे, भ्रमण मनोरंजन के साधनों में वृद्धि होगी, संतान की उन्नति होगी. यश मिलेगा.

मिथुन- सामूहिक कार्य में सबकी सलाह लेकर आगे बढ़े, सफलता मिलेगी, व्यर्थ की चिन्ता दूर होगी, कार्यों में इच्छित सफलता मिलेगी. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा.

कर्क- न चाहते हुये भी समझौता करना पड़ सकता है, प्रापर्टी संबंधी मामले सुलझने की उम्मीद है, पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, व्यवसाय क्षेत्र में सफलता के योग है.

सिंह- मेहमानों की आवाजाही रहेगी, झूठ बोलकर लोग भ्रमित करेंगे, कार्यक्षेत्र में लाभ होगा, धैर्य एवं नम्रता से सहयोग मिलेगा, तनाव से बचें.

कन्या- दुविधा की स्थिति आगे बढ़ने में बाधक होगी, अपनों के कारण मुश्किल हो सकती है, आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, नौकरी में परिश्रम होगा.

तुला- प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के आसार हैं, आय में वृद्धि होगी, मित्रों की मदद करेंगे, नौकरी में परिश्रम अधिक रहेगा, प्रवास का योग है.

वृश्चिक- सहयोगी आपकी कार्यकुशलता और मेहनत का लाभ उठायेंगे, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा, व्यापारिक शिथिलता रहेगी, शुभ संदेश मिलेगा.

धनु- नई योजनाओं की शुरूआत में परेशानी हो सकती है, ले देकर काम कराने की कोशिश सफल होगी, स्वास्थ्य नरम गरम रह सकता है.

मकर- जिद में आकर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, जोखिम से दूर रहें, धार्मिक कार्यों में लगन एवं रूचि रहेगी. प्रयासों में अनुकूलता रहेगी.

कुम्भ- कार्यक्षेत्र में समझौता करना लाभकारी रहेगा, विवादित मामले सुलझने के आसार हैं, नौकरी में अनुकूलता रहेगी, सामाजिक कार्यों में मान सम्मान मिलेगा.

मीन- नए संपर्क कैरियर बनाने में सहायक हो सकते हैं, दुविधा की स्थिति दूर होगी, स्थायी प्रयासों में धन प्राप्त होगा, मांगलिक कार्यों पर विचार होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

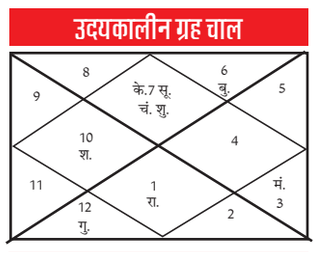

पंचांग

रा.मि. 24 संवत् 2083 भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी भौमवासरे दिन 7/55, स्वाती नक्षत्रे शाम 4/40, ऐन्द्र योगे दिन 2/46, विष्टि करणे सू.उ. 5/54, सू.अ. 6/6, चन्द्रचार तुला, पर्व-ऋषि पंचमीं व्रत, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में मंदी होगी, गुड़ खांड, शक्कर, उड़द, के भाव में वृद्धि होगी, कपास, सरसों, तिल, बिनौला, में वृद्धि होगी, वायदा मार्केट में बाजार का रूख देखकर कार्य करें, भाग्यांक 3657 है.

SUDOKU 7512

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7511

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2